3

राज्यों का राज्य

''उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा'' (दानिय्येल 2:44)।

''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13)।

ज़्या आप सचमुच जानना चाहते हैं कि कल ज़्या होने वाला है? शायद नहीं। हमारे कंधे इतने मज़बूत नहीं हैं कि आज के दायित्वों और भविष्य की चिंताओं को एक साथ उठा पाएं! मसीह और सहजबुद्धि हमें यही सिखाती है कि ''कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा'' (मत्ती 6:34)। शायद इसीलिए परमेश्वर ने समय का पर्दा केवल कुछ लोगों के लिए ही उठाया और उन्हें भविष्य में होने वाली घटनाओं की झलक दी। ऐसा परमेश्वर ने पवित्र आत्मा की आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ से अपने ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए किया न कि मनुष्यों की निकज़्मी जिज्ञासा, व्यज़्तिगत लाभ, या व्यर्थ संवेदनवाद के लिए।

इतिहास में परमेश्वर द्वारा अपने एक सेवक पर भविष्य का पर्दा उठाने का वर्णन दानिय्येल 2 अध्याय में मिलता है। इस अध्याय का शीर्षक ''आने वाले अनन्त राज्य की एक भविष्यवाणी'' हो सकता है।

बाबुल के महान राजा, नबूकदनेस्सर ने एक स्वप्न देखा, जिससे वह बड़ा परेशान हो गया। यह जानकर कि यह स्वप्न कोई साधारण नहीं है, उसने अपने दरबार के पंडितों को बुलाकर उनसे उस स्वप्न का अर्थ बताने के लिए कहा। उनके अर्थ की यथार्थता को परखने के लिए, राजा ने कहा कि पहले वे यह बताएं कि वह स्वप्न ज़्या था और फिर उसका अर्थ बताएं। उन्होंने उज़र दिया, ''हे राजा, अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका अर्थ बताएंगे।'' राजा ने दृढ़ता से कहा, ''नहीं। *तुम* ही पहले स्वप्न बताओ और फिर उसका अर्थ बताओगे। यदि तुम स्वप्न के साथ-साथ अर्थ नहीं बताते तो तुज़्हें मौत का दण्ड दिया जाएगा, परन्तु यदि तुम मुझे स्वप्न भी और उसका अर्थ भी बता दो तो उपहार और पुरस्कार के साथ-साथ तुज़्हें बड़ा सज़्मान भी मिलेगा।'' राजा की ज़िद से उसके पण्डित घबरा गए। या तो वे उसका स्वप्न बताकर उसे उसका अर्थ बताते या यह मान लेते कि वे अयोग्य हैं।

उनके मूर्तिपूजक जादू-टोने समय पड़ने पर उनके किसी काम न आ सके। अपने शज़्दों पर अटकते हुए उन्होंने परेशान और लज्जित होकर राजा के सामने मान लिया, ''महाराज, हम नहीं बता सकते। आपने तो बड़ी अनहोनी बात पूछी है।'' उनके उज़र से चिढ़कर राजा ने आदेश दिया कि बाबुल के *सब* पण्डितों को मृत्यु दण्ड दिया जाए।

राजा के अंगरक्षक अर्योक की अगुआई में मृत्यु का आदेश पूरे बाबुल में भेजा गया। वे दानिय्येल नामक एक इब्रानी व्यज़्ति के पास आए जिसे 606 ई.पू. में बंदी बनाकर बाबुल में लाया गया था, वह परमप्रधान परमेश्वर की आराधना करता और उसका भय मानता था और नबूकदनेस्सर के सबसे विश्वसनीय बुद्धिजीवियों में से एक था। जब दानिय्येल को पण्डितों की हत्या करने का कारण पता चला, तो उसने कहा कि उसे राजा के पास ले जाया जाए ताकि वह सच्चे परमेश्वर यहोवा की सामर्थ से उसका स्वप्न और उसका अर्थ बता सके। दानिय्येल को वह स्वप्न जानने और इसका अर्थ जानने की समझ पाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने का थोड़ा सा समय दिया गया। उसने जल्दी से परमेश्वर का भय मानने वाले अपने मित्रों हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को जो शदरक, मेशक और अबेदनगो नाम से प्रसिद्ध हैं, स्वप्न और उसका अर्थ प्रकट करने के लिए प्रार्थना में उसका साथ देने को बुलाया। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उज़र दिया; रात के समय दानिय्येल को उस रहस्यमयी स्वप्न का अर्थ बताया गया। परमेश्वर को धन्यवाद और महिमा दी गई और फिर अर्योक से उसे नबूकदनेस्सर के पास ले जाने के लिए कहा गया। रहस्य को प्रकट करने से पहले, दानिय्येल ने राजा को यह बताया कि उसे स्वप्न और इसका अर्थ बताने की योग्यता स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिली है।

यह ज़्या स्वप्न था जिसने राजा को परेशान और चिंतित कर दिया था? दानिय्येल ने कहा कि राजा के स्वप्न का सज़्बन्ध ''अंत के दिनों'' से है (दानिय्येल 2:28)। यह वह स्वप्न था जिसमें आने वाले समय की भविष्यवाणी थी। दानिय्येल ने नबूकदनेस्सर को बताया कि इस स्वप्न में उसने एक विशाल मूर्ति देखी है जो देखने में बहुत ही अद्‌भुत और भयभीत करने वाली है। उस मूर्ति का सिर सोने का था, कंधे और छाती चांदी के, पेट और जांघें पीतल की थीं और उसकी टांगें लोहे की, पांव और टखने कुछ लोहे के और कुछ मिट्‌टी के थे। दानिय्येल ने आगे कहा कि राजा ने स्वप्न में एक पत्थर देखा जो बिना किसी के हाथ लगाए पहाड़ से गिरा। उस पत्थर ने आकर मूर्ति के लोहे और मिट्टी मिले पांवों में गिरकर उस मूर्ति को इतनी बुरी तरह से गिराया कि उसका सोना, चांदी, पीतल, लोहा, और मिट्टी ग्रीष्मकाल के दौरान उड़ने वाले भूसे की तरह बिखर गए। उस मूर्ति के भारी भाग को भी आंधी भूसे की तरह उड़ाकर ले गई और वहां मूर्ति का कोई निशान नहीं रहा। परन्तु उस पत्थर ने बहुत बड़ा होकर सारी पृथ्वी को भर दिया (दानिय्येल 2:31-35)।

इस स्वप्न का अर्थ ज़्या था? दानिय्येल ने कहा कि सोने का सिर नबूकदनेस्सर राजा था (दानिय्येल 2:38)। उसने आगे कहा कि बाबुल के बाद तीन और शज़्तिशाली राज्य खड़े होंगे: एक का प्रतीक चांदी, एक का पीतल और एक का लोहे और मिट्टी का मिश्रण था।

दानिय्येल ने बताया कि उस विशाल मूर्ति को राजाओं के दिनों में, स्वर्ग के परमेश्वर

ने एक राज्य खड़ा करना था जो कभी नाश नहीं होना था। इसने दूसरे सभी राज्यों से ऊपर उठकर सदा के लिए रहना था (दानिय्येल 2:44)। दानिय्येल के स्वप्न में दानिय्येल के समय से समय के अंत तक के इतिहास की नहीं बल्कि दानिय्येल के समय से उस समय तक के इतिहास की रूपरेखा है जब परमेश्वर ने अपना राज्य अर्थात वह अनन्त राज्य स्थापित करना था जो संसार के सब राज्यों से ऊपर होना था।

यह स्वप्न जो नबूकदनेस्सर ने देखा और दानिय्येल ने उसका अर्थ बताया था परमेश्वर के आने वाले अनन्त राज्य के बारे में पुराने नियम की एक बड़ी भविष्यवाणी है। इस स्वप्न में स्वर्ग के राज्य से जुड़े मूल तथ्य मिलते हैं। कलीसिया के किसी भी अध्ययन में इस स्वप्न का अध्ययन शामिल किया जाना आवश्यक है। इसमें न केवल परमेश्वर के राज्य की प्रकृति के पहलू प्रकट किए गए हैं बल्कि यह भी सुझाव मिलता है कि परमेश्वर का राज्य कब स्थापित होना था।

इसका ईश्वरीय मूल

ज़विष्यवाणी में परमेश्वर के राज्य के ईश्वरीय मूल का होने की घोषणा है। दानिय्येल ने कहा, ''उन राजाओं के दिनों में *स्वर्ग का परमेश्वर,* एक ऐसा राज्य उदय करेगा'' (दानिय्येल 2:44)। यह राज्य स्वर्ग की ओर से आना था और स्वयं परमेश्वर द्वारा स्थापित किया जाना था।

वह पत्थर जो ''बिना किसी के खोदे, आप ही आप [पहाड़ से] उखड़कर'' (दानिय्येल 2:34) इस बात का संकेत था कि राज्य परमेश्वर द्वारा स्थापित होना था न कि मनुष्यों की ओर से। यह राज्य स्वर्गीय होना था न कि सांसारिक। यह मनुष्य के प्रचार, योजनाओं या नियमों से नहीं बनना था; बल्कि समय में आश्चर्यकर्म की एक घटना के द्वारा, भविष्य में किसी समय स्थापित होना था।

आने वाले राज्य के सज़्बन्ध में यह सच्चाई *अपने आप में सामर्थ* रखती है। इसे विशेष तौर पर परमेश्वर की सामर्थ से पहचाना गया।

इसका पवित्र मूल में भी *विश्वसनीय बनावट* का सुझाव है। संसार के बड़े-बड़े राज्य अविनाशी समझ और बुद्धि से टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाने थे; परन्तु मसीह का राज्य परमेश्वर के अलौकिक कार्य के द्वारा बनाया जाना था और उसमें अविनाशी रहने वाले गुण हैं। इसी प्रकार, राज्य के परमेश्वर का होने के कारण इसकी *सफलता* की *पज़्की* गारन्टी थी। परमेश्वर को अपना पहला प्रयास असफल हो जाने के कारण फिर से बनाने की आवश्यकता नहीं है।

वह हाथ जिससे वह काम करता है,
कभी असफल नहीं होता;
वह ज़ुबान जिससे वह बात करता है,
कभी लड़खड़ाती नहीं;

वह कलम जिससे वह लिखता है,
कभी स्याही नहीं छोड़ती।
जो कुछ भी वह कहता है,
उससे बेहतर कहा नहीं जा सकता;
जो कुछ भी वह करता है,
उससे बेहतर किया नहीं जा सकता।

जिस राज्य की दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी वह स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा जाना था। यह ईश्वरीय आदेश से शुरू होना था और इसमें अपने बनाने वाले की बुद्धि और अनन्त होने की झलक होनी थी।

इसकी स्थापना भविष्यवाणी के अनुसार

भविष्यवाणी में राज्य की स्थापना के लिए परमेश्वर का ठहराया हुआ समय भी बताया गया। दानिय्येल ने कहा, ''*उन राजाओं के दिनों में* स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा'' (दानिय्येल 2:44)। विशेष तौर पर, परमेश्वर ने इस मूर्ति द्वारा दर्शाए राज्यों के दिनों में अपना राज्य स्थापित करना था, और, संकेत के अनुसार ऐसा चौथे राज्य के दिनों में होना था।

नबूकदनेस्सर के स्वप्न में चार सांसारिक राज्य दिखाए गए थे। नबूकदनेस्सर का राज्य सबसे पहला था (दानिय्येल 2:37), एक उसके बाद आने वाला था (दानिय्येल 2:39), तीसरा दूसरे राज्य के बाद आना था (दानिय्येल 2:39) और उसके बाद चौथा राज्य आना था (दानिय्येल 2:40-43)।

सैकुलर इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि बाबुल के साम्राज्य के बाद तीन विश्व-प्रसिद्ध राज्य हुए हैं। वे राज्य मादा फारस, यूनान और रोमी साम्राज्य थे। दूसरे और तीसरे राज्यों अर्थात मादा फारस और यूनान के नाम दानिय्येल 8:20, 21 में लिखित दानिय्येल को दर्शन में से बताए गए थे।

दानिय्येल ने चौथे राज्य का नाम नहीं बताया, परन्तु यह कहकर कि वह लोहे और मिट्टी अर्थात शक्ति और दुर्बलता का मिश्रण होगा, उसने इसकी विशेषता बता दी। पांव और टखने लोहे और मिट्टी के तो बने हुए थे परन्तु लोहा और मिट्टी अलग-अलग राज्यों को नहीं कहा गया है; बल्कि यह मिश्रण राज्य की फूट और एकाग्रता की कमी के मिश्रण का संकेत था। राज्य में अंदरूनी एकता या एक होने की शक्ति नहीं होनी थी। बिना किसी संदेह के, यह रोमी राज्य ही था, क्योंकि यह विश्व साम्राज्य के रूप में यूनान के बाद का राज्य था और मिश्रित किस्म का था। पहले तो इसने लोहे की तरह मजबूत होने के कारण निर्दयता से दूसरे राष्ट्रों को कुचल दिया, परन्तु अंतत: इसमें ही अन्दरूनी फूट पड़ गई जो जीते हुए देशों में विद्रोहों का कारण बनी।

बिना हाथ लगाए पहाड़ से निकलने वाले उस छोटे पत्थर ने आकर उस मूर्ति के पांवों

में गिरकर उसे चकनाचूर कर दिया। ज़्योंकि उस मूर्ति के पांव चौथे राज्य का भाग थे इसलिए इसका अर्थ यह है कि अनन्त राज्य इस चौथे राज्य के समय में ही आया। मसीह की सेवकाई और कलीसिया की स्थापना रोमी साम्राज्य द्वारा संसार पर शासन करने के समय ही आई। 476 ई. में रोमी साम्राज्य का अन्त हो गया। यह अन्त मसीह की सेवकाई तथा कलीसिया की स्थापना के बाद में हुआ पहले नहीं। इसलिए दानिय्येल की भविष्यवाणी समय के विषय में बिल्कुल सटीक थी कि परमेश्वर ने अपने राज्य की स्थापना कब करनी थी: उसने रोमी साम्राज्य के दिनों में अपना राज्य बनाना था; पतन के बाद रोमी साम्राज्य का अन्त हो जाना था, परन्तु परमेश्वर का राज्य हमेशा तक बने रहना था।

मैं सरसी, आरकैंसा में रहता हूं। अधिकतर नगरों की तरह इसका आकार (जनसंख्या: 18,000), इसके उपमण्डल बनाए गए हैं। जब मैं किसी से कहता हूं कि मैं सरसी के ज़्लोवरडेल उपमण्डल में रहता हूं, तो उसे समझ आ जाती है कि मेरा घर किसके निकट है। उसे सरसी के उस विशेष क्षेत्र का पता चल जाता है, जहां मेरा घर है।

दानिय्येल ने हमें परमेश्वर के राज्य के स्थापित होने का वर्ष नहीं बताया, लेकिन उसने समय का काल अवश्य बताया–''इन राजाओं के दिनों में।'' इससे हमें समझ आ जाती है कि यह किस युग की बात होगी। हमें समय के कोष्ठक की समझ आ जाती है जिसमें परमेश्वर का राज्य स्थापित होने वाला था।

पूरे संसार में इसका बढ़ ना

दानिय्येल की भविष्यवाणी में परमेश्वर के राज्य के अद्‌भुत ढंग से बढ़ने का संकेत है। दानिय्येल ने कहा, ''और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, *बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया*'' (दानिय्येल 2:35)।

राज्य ने आरज़्भ में तो छोटा ही होना था, परन्तु शीघ्र ही उसने एक विश्वव्यापी राज्य बन जाना था। वह छोटा पत्थर जो बिना हाथ लगाए पहाड़ में से निकला था, एक बड़ा पहाड़ बन जाना था जिसने सारे संसार को प्रभावित करना था।

अपने एक दृष्टांत में, यीशु ने स्वर्ग के राज्य के बढ़ने की तुलना राई के बीज के बढ़ने से की थी। उसने कहा था, ''वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तो सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं'' (मज़ी 13:32)।

परमेश्वर के राज्य के संसार में तुरन्त, विशाल, विश्वव्यापी स्तर पर फूट पड़ने की न तो दानिय्येल ने भविष्यवाणी की न यीशु ने प्रचार ही किया। परन्तु दानिय्येल और यीशु ने यह भविष्यवाणी अवश्य की कि एक समय यह राज्य अविश्वसनीय ढंग से बढ़ जाएगा। इसने छोटी सी शुरुआत करके पूरे संसार में फैल जाना था। परमेश्वर के राज्य ने शुरू में बड़ा होकर असफल नहीं होना था, बल्कि इसने छोटे से शुरू करके धीरे-धीरे बढ़कर पूरे संसार में फैल जाना था।

सैम वाल्टन ने बैंटोनविले, आरकैंसा में पांच और दस सैंट के साथ अपना अरबों

डॉलर का छोटा सा वालमार्ट स्टोर चालू किया। उसके लिए पहला स्टोर शुरू करने के लिए उधार देना आवश्यक था। शुरू में यह छोटा था, परन्तु उसका व्यवसाय छोटा नहीं रहा। अब पूरे विश्व में इस कज़्पनी के 7,46,000 कर्मचारी हैं। अपनी मृत्यु से पूर्व, सैम वाल्टन संसार के सबसे धनी लोगों में से एक था। परन्तु, उसके व्यावसायिक साम्राज्य की इतनी उन्नति, परमेश्वर के राज्य के विस्तार के एक प्रतिशत का छोटा सा अंश भी नहीं होगी (देखिए प्रकाशितवाज़्य 7)। दानिय्येल के अनुसार, परमेश्वर का राज्य एक छोटे पत्थर से शुरू होकर पहाड़ अर्थात एक घटना से शुरू होकर एक लहर बनना था।

इसका अविनाशी होना

दानिय्येल की भविष्यवाणी आने वाले राज्य की ईश्वरीय सामर्थ और अनन्तकाल पर ज़ोर देती है। उसने कहा, ''न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा, वरन वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा'' (दानिय्येल 2:44)। इस राज्य ने दूसरे सब राज्यों पर बलवन्त होकर स्थिर रहना था।

दानिय्येल ने कहा कि वह छोटा पत्थर जो एक आत्मिक हाथ से पहाड़ में से बिना खोदे निकला था, मूर्ति के पांवों में लगा। वह मूर्ति चूर-चूर हो गई; उसका सोना, चांदी, पीतल, लोहा और मिट्टी गेहूं के भूसे की तरह आंधी में उड़ गए।

यह अनाज पीटने की तरह ही था। पीटे गए अनाज को शाम को आने वाली हवा में उसमें से बेकार भूसा निकालने के लिए उड़ाया जाता था। परमेश्वर के राज्य की तुलना में, स्वप्न में दिखाए गए वे चार राज्य अनाज के बाहरी खोल की तरह बेकार हो जाने थे।

अतीत हो या वर्तमान या भविष्य, परमेश्वर का राज्य मनुष्य के सब राज्यों से अधिक शज़्तिशाली है। किसी भी सांसारिक राज्य या संसार के सब राज्यों द्वारा मिलकर इस पर विजय नहीं पाई जा सकती; दानिय्येल 2:44 के अनुसार यह कभी ''किसी दूसरी जाति के हाथ में किया'' नहीं जाना था।

परमेश्वर के राज्य का भाग होना ऐसी सेना में होने की तरह है जो अजेय हो।

दानिय्येल ने कहा, ''स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अंत कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा'' (दानिय्येल 2:44)। दानिय्येल द्वारा इस्तेमाल की गई तीन अभिव्यज़्तियों का अर्थ एक आत्मिक प्रकृति है: ''अनन्तकाल तक न टूटेगा,'' ''न किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा,'' और ''सदा स्थिर रहेगा।'' एक बार स्थापित होने के बाद यह राज्य सदा तक रहना था।

हमारे मन के किसी कोने में यह सवाल उठता है, ''कल ज़्या होने वाला है?''; ''हमारे संसार का भविष्य कैसा होगा?''; ''आज से दस हज़ार वर्ष बाद मैं कहां हूंगा?'' दानिय्येल

की किताब हमें यह बल देने वाली खबर देती है कि हम उस राज्य का भाग हो सकते हैं जिसका कभी अन्त नहीं होगा।

परमेश्वर के राज्य का भाग होना किसी अजेय सेना में होने जैसा है, उसके सामने चाहे कितना भी बड़ा शत्रु ज़्यों न आ जाए। परमेश्वर के राज्य के लोगों के मन में हार का विचार भी नहीं आना चाहिए। कोई अनदेखा कल या अज्ञात शत्रु हमें डरा न पाए।

एक प्रसिद्ध निशानेबाज़ की कहानी बताई जाती है जो एक मित्र को मरे जानवरों के सिरों से बनीं ट्रॉफियों वाला अपना कमरा दिखा रहा था। दीवारों में उन जंगली शेरों के सिर लगे हुए थे जो दुनिया भर से शिकार करके लाए गए थे। फिर, उस मित्र ने ध्यान दिया कि दीवार के मध्य में एक प्रमुख जगह पर शेर की पूंछ लटकाई गई है। मित्र ने पूछा, ''आपने वहां शेर की पूंछ ज़्यों लगाई हुई है ? मेरे विचार से यदि वहां शेर का सिर होता तो ज्यादा सुंदर लगता।'' उस महान शिकारी ने चुपके से मान लिया, ''इससे पहले कि शेर मुझे मिलता, कोई पहले ही उसका सिर काटकर ले गया था।'' यदि कोई शेर का सिर पहले से ही काटकर ले गया है तो उसकी पूंछ काटना मुश्किल नहीं है।

इसी प्रकार, यदि हमें मालूम है कि विजय तो पहले ही मिल चुकी है तो विजयी जीवन जीना कठिन नहीं है। स्वर्ग का राज्य कभी पराजय नहीं देखेगा। राज्य की स्थापना से पूर्व इसकी भविष्यवाणी में संसार पर इसके शौर्य और सज़्पूर्ण विजय की भविष्यवाणी कर दी गई थी। इसलिए मसीही व्यज़्ति *विजय के लिए* नहीं बल्कि *विजयी होकर* कार्य करता है। वह आश्वस्त जीवन बिताता है ज़्योंकि वह जानता है कि पराजय के शेर का सिर पहले ही काट दिया गया है। हमने पुस्तक का अंतिम पृष्ठ पढ़ लिया है। परमेश्वर की संतान के लिए, मानवीय इतिहास की कहानी, परमेश्वर के सिंहासन के आस-पास छुटकारे के सदा तक रहने वाले जश्न में पूरी होगी।

सारांश

ज़्या हमें नये नियम में दानिय्येल की भविष्यवाणी पूरी हुई मिलती है ? आइए इसके उज़र के लिए प्रेरितों 2 अध्याय देखते हैं।

दानिय्येल ने कहा था कि आने वाले राज्य की स्थापना परमेश्वर करेगा और इस कारण इस राज्य का मूल ईश्वरीय होना था। प्रेरितों 2 अध्याय में प्रेरितों पर आश्चर्यकर्म से पवित्र आत्मा बहाया गया और कलीसिया के आरज़्भ के साथ सुसमाचार का युग अलौकिक ढंग से शुरू हुआ। अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने यह संकेत दिया था कि राज्य का आना प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म से आने के साथ सामर्थ के साथ होगा (मरकुस 9:1; लूका 24:46-49)।

भविष्यवाणी में संकेत था कि आने वाला राज्य रोमी साम्राज्य के दिनों में स्थापित होना था। स्पष्ट रूप से प्रेरितों 2 अध्याय उसी समय के साथ मेल खाता है ज़्योंकि प्रेरितों 2 अध्याय में होने वाली घटनाओं के समय संसार पर रोम की हुकूमत थी।

दानिय्येल ने कहा था कि आने वाला राज्य संसार के राज्यों से मजबूत होगा। यीशु ने

अपनी कलीसिया की स्थापना की बात करते हुए कहा कि, ''अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।

परमेश्वर ने दानिय्येल पर प्रकट कर दिया था कि आने वाला राज्य सदा तक रहेगा। प्रेरितों 2 अध्याय में कलीसिया की स्थापना के बाद, शेष नया नियम इसके बढ़ने और स्थिर रहने की बात बताता है।

ज़्या इसमें कोई संदेह हो सकता है कि प्रेरितों 2 अध्याय में कलीसिया की स्थापना के साथ दानिय्येल की भविष्यवाणी पूरी हो गई? कलीसिया ही वह अविनाशी राज्य है जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया।

मसीह की कलीसिया अर्थात अनादि राज्य के सदस्य होने के लाभ हैं। परमेश्वर के राज्य के लोग उस सबका भाग हैं जो वह संसार में कर रहा है। ये लोग विजय में रहते हैं, ज़्योंकि परमेश्वर का राज्य संसार में मनुष्यों के सब राज्यों से बल्कि मृत्यु से भी सामर्थी है। भविष्यवाणी किए हुए राज्य के लोग सदा तक परमेश्वर के साथ रहेंगे। उस जीवन और कार्य में लगे हुए जो समय के साथ खत्म या कम नहीं होगा, वे आत्मिविश्वास से भरे, आश्वस्त हैं।

एथलेटिक मुकाबले को देखकर हम उस अविनाशी राज्य में होने के महत्व को समझ सकते हैं। जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ता है, हमारी घबराहट भी बढ़ती जाती है ज़्योंकि हम यह नहीं बता सकते कि ज़्या वह टीम जिसका हम समर्थन कर रहे हैं, जीत भी पाएगी या नहीं। हम पूरे खेल में अपनी सीट पर खड़े होते रहते हैं ज़्योंकि हमें नहीं मालूम कि अन्त में कौन जीतेगा। आप कह सकते हैं, ''इसी से तो खेल रोमांचक बनता है। आपको पता नहीं कि यह खत्म कैसे होगा।'' खेल में ऐसा हो सकता है, परन्तु जीवन में नहीं। वह व्यज़्ति जिसे यह नहीं पता कि उसका जीवन कैसे समाप्त होगा कैसा अभागा है। यदि उसे यह जाने बिना कि वह जीतने वाली टीम की ओर है या नहीं जीवन भर चलता रहना हो, तो वह बहुत अभागा व्यज़्ति है जिसका दुख सुसमाचार के अलावा कोई दूर नहीं कर सकता। मसीही व्यज़्ति जानता है कि उसका जीवन कैसे समाप्त होगा: अविनाशी राज्य का भाग बनकर, वह स्वर्ग में सदा तक परमेश्वर के साथ रहेगा।

इसके प्रकाश में, यदि हम परमेश्वर के अविनाशी राज्य में हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे पास ज़्या नहीं है; और यदि हम परमेश्वर के राज्य के भाग नहीं हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे पास ज़्या है। हमारे परमेश्वर के अनन्त राज्य में आने से अस्थाई अविनाशी बन जाता है और जो नाशवान है वह अमरता को पहन लेता है। यीशु ने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा'' (यूहन्ना 11:25)। परमेश्वर के राज्य में शारीरिक मृत्यु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। पौलुस लिखता है, ''ज़्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है'' (फिलिप्पियों 1:21)। मसीही व्यज़्ति के लिए मृत्यु एक लाभदायक प्रस्ताव है। एक पवित्र व्यज़्ति के लिए मृत्यु पीड़ा नहीं बल्कि लाभ है-शाप नहीं बल्कि आशीष है।

यदि आप केवल इस संसार में जीने के लिए जी रहे हैं, तो आप इस और आने वाले संसार दोनों से हाथ धो बैठेंगे। यदि आपका जीवन केवल आने वाले संसार के लिए है, तो

आपको यह और आने वाला दोनों संसार मिल जाएंगे!

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. नबूकदनेस्सर के पण्डित राजा के स्वप्न का अर्थ ज़्यों नहीं बता पाए थे?
2. परमेश्वर द्वारा स्वप्न का अर्थ बताने के समय दानिय्येल ज़्या कर रहा था?
3. नबूकदनेस्सर द्वारा स्वप्न में देखी गई मूर्ति का वर्णन विस्तार से करें।
4. दानिय्येल ने मूर्ति के हर भाग की व्याज़्या कैसे की?
5. इस स्वप्न में इतिहास का कौन सा भाग था?
6. यह अविनाशी राज्य किसने स्थापित करना था? स्वप्न में प्रतीकात्मक रूप में इसकी स्थापना को कैसे दिखाया गया था?
7. अविनाशी राज्य कब स्थापित होना था?
8. रोमी साम्राज्य किस प्रकार का राज्य था? स्वप्न में इसे कैसे दिखाया गया?
9. निज़्न अभिव्यज़्तियों में से परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए कौन सी सबसे सही होनी थी: (क) छोटे से विश्वव्यापी, (ख) विश्वव्यापी से छोटा, (ग) विश्वव्यापी से विश्वव्यापी?
10. स्वप्न में परमेश्वर के राज्य की सामर्थ का संकेत कैसे दिया गया?
11. दानिय्येल 2 अध्याय में परमेश्वर के राज्य के सदा तक रहने की अभिव्यिज़्तियों को कैसे इस्तेमाल किया गया है?
12. तर्क तथा पवित्र शास्त्र से सिद्ध करें कि दानिय्येल द्वारा जिस राज्य की भविष्यवाणी की गई थी, वह कलीसिया ही है।
13. अविनाशी राज्य के लोग होने के लाभ बताएं।